किसानों में पानी बचाने की जिद

धान की डायरेक्ट सीडिंग से लेबर की समस्या भी दूर हुई और पैदावार भी बढ़ी

महाबीर सेठ | सेखों पिंड (बरनाला)

प्रदेश में गिरते भू-जल स्तर पर सरकार दुख व्यक्त करती है, लेकिन पानी बचाने के लिए सेखों गांव के पांच किसानों ने जिद पकड़ ली। जिद ऐसी थी कि धान की खेती भी करेंगे और दूसरों के मुकाबले पानी की बचत भी करेंगे। इन किसानों ने पेप्सीको इंडिया के सहयोग से धान की खेती नई विधि सीधी बिजाई (डायरेक्ट सीडिंग) से शुरू की। फसल की पैदावार भी बढ़ी और 30 फीसदी पानी भी बचाया जा सका है।

सेखों गांव का युवा मंदीप सिंह पानी बचाने और ज्यादा पैदावार के लिए संघर्ष में जुटा था। मंदीप सिंह ने पेप्सीको के प्रतिनिधि से मिलकर 20 एकड़ में सीधी बिजाई से धान की खेती शुरू की। गांव के बलविंदर सिंह, मोहकम सिंह, मोहिंदर सिंह और गुरपाल सिंह ने भी धान की सीधी बिजाई शुरू की। पेप्सीको इंडिया (एग्रोनॉमी) के उपाध्यक्ष जयदीप भाटिया कहते हैं कि डीएसआर प्रणाली को सफलतापूर्वक लागू करवाने का असली श्रेय किसान मित्रों को जाता है। उनके नियमित प्रयासों और समर्पण से हम कई गुणा सफलता प्राप्त कर चुके हैं।

पेप्सीको के प्रतिनिधि किसानों के साथ बातचीत करते हुए।

धान की खेती में अपनाएं नई विधि : प्रदेश में धान में 50 प्रतिशत पानी की खपत होती है। पारंपरिक तौर पर धान की खेती में बीजों को एक छोटी नर्सरी में लगाया जाता है और उसके बाद उसके पौधों को चार सप्ताह बाद मुख्य कृषि वाले क्षेत्र में लगाया जाता है। उसके बाद उन पौधों को बढ़ने दिया जाता है और खेतों में 3 से 4 इंच तक पानी खड़ा रखा जाता है। वहीं डायरेक्ट सीडिंग प्रणाली में बीजों को सीधे खेतों में बीजा जाता है, जिससे पानी की खपत काफी हद तक कम हो जाती है।

पेप्सीको ने किसानों को किया सम्मानित : पेप्सीको इंडिया की तरफ से प्रदीप बधवा, जयदीप भाटिया और नितिन यादव ने कहा कि सीधी बिजाई (डायरेक्ट सीडिंग) के तहत धान की खेती 10 हजार एकड़ का आंकड़ा पार कर गई है। गांव सेखों में आयोजित एक कार्यक्रम में पेप्सीको ने पानी की बचत करने वाली इस प्रक्रिया को अपनाने और सफलता प्राप्त करने वाले किसानों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि बरनाला, फरीदकोट, मुक्तसर, संगरूर, बठिंडा, मानसा और मोगा के करीब 2 हजार किसान नई विधि से खेती कर रहे हैं।

ऐसी शुरू हुई पानी बचाने की मुहिम : पेप्सीको इंडिया ने वर्ष 2004 से लेकर 2006 में धान के लिए एक डायरेक्ट सीडिंग मशीन विकसित की जो कि बीजों को एक निश्चित अंतर और एक समान गहराई में रोपती है। इस सीडर की मदद से 12 किसानों के खेतों में सीधी बिजाई की गई और इसमें करीब 20 एकड़ का रकबा आया।

किसानों को लाभ

- पानी की 30 प्रतिशत तक बचत
- प्रति एकड़ 1500 रुपए की कमी
- श्रम खर्च में प्रति एकड़ 50 प्रतिशत की कमी
- किसानों को डायरेक्ट सीडिंग मशीनों के सुपत उपयोग की सुविधा